09-07-2020
Dr Tapali Mukerjee
Associate Professor
Dept. of Music
R. M. College Saran.

B.A Part III (Hons)

Study material For B A Part IIIrd (Hons) Theory Paper 6th
Topic वीणा के 36" तार पर पं श्रीनिवास जी के शुद्ध तथा विकृत स्वरों की स्थापना
Continued Previous 8.07.2020

(5) तीव्र मध्यम
पं श्रीनिवास जी ने इस स्वर की स्थापना कोमल गान्धार और तार षड्ज की लम्बाई को तीन समान भागों में विभाजित करते हुए तीव्र गान्धार से पहले और तार षड्ज से द्वितीय भाग पर स्थापित किये। तीव्र गान्धार तथा तार षड्ज की लम्बाई $28\frac{2}{3} - 18 = 10\frac{2}{3}$ या $\frac{32}{3}$" है। जिसके कारण तीव्र मध्यम जो तार षड्ज से द्वितीय भाग यानि $\frac{32}{9} + \frac{32}{9} = \frac{64}{9}$" है अतः के तार षड्ज $18 + 7\frac{1}{9} = 25\frac{1}{9}$" इंच पर स्थापित है।

इस प्रकार हम मानते हैं कि श्रीनिवास जी ने एक सप्तक के 7 शुद्ध स्वर तथा 5 विकृत स्वर कुल 12 स्वरों की स्थापना वीणा की तार के लम्बाई पर निम्नलिखित स्थानों में स्थापित किए —

शुद्ध स्वर

(1)	षड्ज (मध्य सा)	36" तथा तार षड्ज 18" पर
(2)	ऋषभ (रे)	32"
(3)	गान्धार (ग)	30"
(4)	मध्यम (म)	27"
(5)	पंचम (प)	24"
(6)	धैवत (ध)	$21\frac{2}{3}$"
(7)	निषाद (नि)	20"

Scanned with CamScanner

विकृत स्वर

1. कोमल ऋषभ (रे) $33\frac{1}{3}$"
2. तीव्र या कोमल गांधार (ग) $28\frac{2}{3}$"
3. तीव्रतर मध्यम (मं) $25\frac{1}{9}$"
4. कोमल धैवत (ध) $22\frac{2}{9}$"
5. कोमल निषाद (नि) $19\frac{2}{9}$"

लेकिन आधुनिक संगीतज्ञों ने भी मध्यकाली व संगीत विद्वानों के अनुरूप वीणा के तार की लम्बाई पर अपने स्वरों की स्थापना विभिन्न Mesurment से किये है। यह दोनों समय के ग्रन्थकार या संगीतज्ञों में बहुत कुछ एक समान है केवल कुछ स्वरों में अन्तर आ गया है। आधुनिक संगीतज्ञों ने बिलावल थाट को शुद्ध मानते है जबकि मध्यकाल के संगीतविदों ने आधुनिक काफि थाट को शुद्ध थाट मानते थे।

आधुनिक युग भी संगीत के मुख्य प्रतिनिधि पं स्व० भातखण्डे जी को माने जाते है उन्होंने अपनी पुस्तक "अभिनव राग मंजरी" में वीणा के तार की लम्बाई पर स्वरों की स्थापना का वर्णन किये है।